राजस्थानः स्थिति, विस्तार, आकृति एवं भौतिक स्वरूप

- राजस्थान क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत का सबसे बड़ा राज्य है। राजस्थान का क्षेत्रफल 3,42,239 वर्ग किमी. है जो सम्पूर्ण देश के क्षेत्रफल का 10.41प्रतिशत है। राजस्थान भारत का सबसे बड़ा राज्य है।
- राजस्थान राज्य का आकार विषमकोणीय चतुर्भुज के समान है
- राजस्थान भारत के उत्तर-पश्चिमी भाग में स्थित है।
- **राजस्थान के क्षेत्रफल की दृष्टि से वृहत् जिले**-
  1 जैसलमेर - 38401 वर्ग किमी.
  2 बाड़मेर - 28387 वर्ग किमी.
  3 बीकानेर - 27244 वर्ग किमी.
  4 जोधपुर - 22850 वर्ग किमी.
- राजस्थान का क्षेत्रफल की दृष्टि से सबसे छोटा जिला धौलपुर (3034 वर्ग किमी.) है। जबकि राज्य का दूसरा सबसे छोटा जिला ' दौसा' (3432 वर्ग किमी.) है

स्थिति एवं विस्तार

- **स्थिति** - राजस्थान भारत के उत्तरी पश्चिमी भाग में $23^{0}3$ उत्तरी अक्षांश से $30^{0}12$ उत्तरी अक्षांश तथा $69^{0}30$ पूर्वी देशान्तर से $78^{0}17$ पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है।
- राजस्थान राज्य का अधिकांश भाग कर्क रेखा के उत्तर में स्थित है।
- कर्क रेखा राज्य के डूंगरपुर जिले की दक्षिणी सीमा से होती हुई बाँसवाड़ा जिले के लगभग मध्य से गुजरती है। बाँसवाड़ा कर्क रेखा के सर्वाधिक नजदीक शहर है।
- कर्क रेखा के उत्तर मे होने के कारण जलवायु की दृष्टि से राज्य का अधिकांश भाग **उपोष्ण या शीतोष्ण कटिबंध** में स्थित।
- **विस्तार**- राजस्थान राज्य की उत्तर से दक्षिण तक की लम्बाई 826 किमी. है जो उत्तर में गंगानगर जिले के कोणा गांव से दक्षिण में बांसवाड़ा जिले के बोरकुण्ड गांव की सीमा तक है।
- राज्य की पूर्व से पश्चिम तक चौड़ाई 869 किमी. है जिसका विस्तार पश्चिम में जैसलमेर जिले के कटरा गांव (सम) से पूर्व में धौलपुर जिले के सिलाना गांव (राजाखेड़ा)तक है।

राजस्थान की सीमाएँ

- राजस्थान की उत्तरी और उत्तरी-पूर्वी पंजाब तथा हरियाणा से, पूर्वी सीमा उत्तरप्रदेश एवं मध्यप्रदेश से दक्षिणी पूर्वी सीमा मध्यप्रदेश से तथा दक्षिणी और दक्षिणी-पश्चिमी सीमा क्रमशः मध्य प्रदेश तथा गुजरात से संयुक्त रूप से लगती है।
- राजस्थान की पश्चिमी सीमा पाकिस्तान से लगी हुई है।
- राज्य की कुल स्थल सीमा 5920 किमी. है। जिसमें से 1070 किमी. अंतर्राष्ट्रीय सीमा (रेडक्लिफ) पाकिस्तान से लगती है। राजस्थान की अंतर्राज्यीय सीमा 4850 किमी. है
- गंगानगर बीकानेर, जैसलमेर, बाड़मेर जिले पाकिस्तान की सीमा को स्पर्श करती है।
- पाकिस्तान से लगने वाली सार्वधिक लम्बी सीमा जैसलमेर की है और सबसे छोटी सीमा बीकानेर की है।

पाकिस्तान की सीमा को स्पर्श करने वाले जिलों का अवरोही क्रम-

जैसलमेर	-	464 किमी.
बाड़मेर	-	228 किमी.
श्रीगंगानगर	-	210 किमी.
बीकानेर	-	168 किमी.

- पाकिस्तान के बहावलपुर, (पंजाब प्रांत) मीरपुर, खैरपुर जिले (सिंध प्रांत) जो राजस्थान की सीमा को स्पर्श करते है।
- **रेडक्लिफ रेखा** (अंतर्राष्ट्रीय सीमा रेखा) उत्तर में श्रीगंगानगर जिले के हिन्दुमल कोट से प्रारम्भ होकर दक्षिण में बाड़मेर जिले के शाहगढ़ (बाखासर गांव) में समाप्त होती है।
- अंतर्राज्यीय सीमाओं में राजस्थान की सर्वाधिक लम्बी अंतर्राज्यीय सीमा मध्य प्रदेश (1600 किमी.) से लगती है। तथा कम अंतर्राज्यीय सीमा पंजाब (89 किमी.) राज्य से लगती है।
- श्री गंगानगर - पंजाब के साथ सर्वाधिक सीमा।
- हनुमानगढ़ - पंजाब के साथ न्यूनतम सीमा।
- हनुमानगढ़ - हरियाणा के साथ सर्वाधिक सीमा।
- जयपुर - हरियाणा के साथ न्यूनतम सीमा।
- भरतपुर - उत्तरप्रदेश के साथ सर्वाधिक सीमा।
- धौलपुर - उत्तरप्रदेश के साथ न्यूनतम सीमा।
- झालावाड़ - मध्यप्रदेश के साथ सर्वाधिक सीमा।
- भीलवाड़ा - मध्य प्रदेश के साथ न्यूनतम सीमा
- उदयपुर - गुजरात के साथ सर्वाधिक सीमा।
- बाड़मेर - गुजरात के साथ न्यूनतम सीमा।
- झालावाड़ - सर्वाधिक अन्तर्राज्यीय सीमा रेखा वाला राज्य
- बाड़मेर - न्यूनतम अन्तर्राज्यीय सीमा रेखा वाला जिला
- पाकिस्तान के सबसे नजदीक राजस्थान का सीमावर्ती जिला मुख्यालय श्रीगंगानगर है जबकि सीमावर्ती जिलों में सबसे दूर जिला मुख्यालय बीकानेर है।

अन्य राज्यों की सीमाओं से लगने वाले राजस्थान के जिले -

- पंजाब से राजस्थान के दो जिले लगे हुए है-
  गंगानगर, हनुमानगढ़।
- हरियाणा की सीमा से लगे हुए जिले सात है-
  हनुमानगढ़, चूरू, झंझुनूं, सीकर, जयपुर, अलवर, भरतपुर ।
- उत्तर प्रदेश की सीमा से दो जिले लगे हुए है-
  भरतपुर, धौलपुर।
- मध्य प्रदेश की सीमा से दस जिले लगे हुए है-
  धौलपुर, करौली, सवाईमाधोपुर, कोटा, बारॉं, झालावाड़, चित्तौड़गढ़, भीलवाड़ा, बाँसवाड़ा व प्रतापगढ़।
- गुजरात की सीमा से छः जिले लगे हुए है-
  बाँसवाड़ा, डुंगरपुर उदयपुर, सिरोही, जालौर व बाड़मेर।
- राजस्थान के आठ जिले ऐसे है जिनकी सीमा किसी भी राज्य या अन्य देश से नहीं मिलती है- पाली, जोधपुर, नागौर, दौसा, टोंक, बुँदी, अजमेर, व राजसमंद। **(सूत्रः- पाबू जोरा अटो दौना)**

- पाली जिले की सीमा सर्वाधिक जिलों (8) अजमेर, बाड़मेर जालौर, जोधपुर, नागौर, राजसमंद, सिरोही व उदयपुर से मिलती है। **(सूत्र- जोरा बा उसी अ जाना)**

राजस्थान के साथ अंतर्राष्ट्रीय व अंतर्राज्यीय सीमा के जिले		
राज्य	**जिले**	**जिलों के नाम**
पंजाब	2	मुक्तसर, फजिल्का (*FM*)
हरियाणा	8	सिरसा, फतेहपुर, हिसार, भिवानी, महेन्द्रगढ़, रेवाड़ी, गुडगाँव, मेवात **सूत्रः- सिर फते हि महेन्द्र भवानी रेखा गुड मेवा**
उत्तर प्रदेश	2	आगरा, मथुरा (आम)
मध्य प्रदेश	10	झाबुआ, रतलाम, मंदसौर, नीचम, शाजापुर राजगढ़, गुना, शिवपुरी, श्योपुर, मुरैना **सूत्रः- श्योमु शिगु रानी शाम रझा**
गुजरात	6	कच्छ, बनासकांठा, साबरकांठा, अरावली, महीसागर, दाहोद **सूत्रः- अकम दा साब**

राजस्थान के संभाग व जिले

- 1 नवम्बर 1956 को राजस्थान में 5 संभाग थे।
- सन 1962 में राजस्थान के मुख्यमंत्री मोहनलाल सुखाड़िया ने संभागीय व्यवस्था को समाप्त कर दिया था।
- 26 जनवरी, 1987 में राजस्थान के तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री हरदेव जोशी ने पुनः संभागीय व्यवस्था प्रारम्भ की और उस समय छठे संभाग के रूप में अजमेर को दर्जा दिया गया।
- 4 जून 2005 को राजस्थान की मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे ने 7 वें संभाग के रूप में भरतपुर संभाग का गठन किया।
- वर्तमान में राज्य में 7 संभाग और 33 जिले है।

संभागों का वर्गीकरण

1. **जयपुर संभाग** – जयपुर, सीकर, झुंझुनँ,अलवर, दौसा।
   – जयपुर संभाग में 5 जिले है।
   – जनसंख्या व जनसंख्या घनत्व की दृष्टि से सबसे बड़ा संभाग जयपुर है
2. **कोटा संभाग** – कोटा,बूँदी, झालावाड़, बाँरा।
   – जनसंख्या की दृष्टि से सबसे छोटा।
3. **अजमेर संभाग** – अजमेर, भीलवाड़ा, टोंक, व नागौर।
   – यह राज्य का मध्यवर्ती संभाग है।
4. **भरतपुर संभाग** – भरतपुर,धौलपुर, करौली, सवाईमाधौपुर जिले शामिल है तथा क्षेत्रफल की दृष्टि से सबसे छोटा संभाग है।
5. **बीकानेर संभाग** – बीकानेर, श्रीगंगानगर,चूरू व हनुमानगढ़।
6. **उदयपुर संभाग** – उदयपुर, बाँसवाड़ा, चित्तौड़गढ़, डुंगरपुर, राजसमंद, प्रतापगढ़।
7. **जोधपुर संभाग** –जोधपुर,बाड़मेर, सिरोही, जैसलमेर, पाली, जालौर। क्षेत्रफल की दृष्टि से सबसे बड़ा संभाग है।

राजस्थान के जिलों की स्थिति

- 1 नवम्बर, 1956 को अर्थात् राजस्थान के पूर्ण एकीकरण के समय राजस्थान में 26 जिले थे वर्तमान में राजस्थान में 33 जिले है। प्रतापगढ़ को 26 जनवरी, 2008 को 33वाँ जिला बनाया गया है।
- धौलपुर राजस्थान का 27वाँ जिला 15 अप्रैल, 1982 को बना।
- 10 अप्रैल,1991 को 28वाँ जिला दौसा, 29वाँ जिला बाँरा एवं 30वाँ जिला राजसमंद बना।
- 12 जुलाई, 1994 को हनुमानगढ़ राज्य का 31वाँ जिला बना।
- 19 जुलाई, 1997 को करौली राज्य का 32वाँ जिला बनाया गया।
- राज्य में वर्तमान में 7 नगर-निगम-जयपुर, जोधपुर, कोटा, अजमेर, बीकानेर, उदयपुर, भरतपुर।
- 30 जुलाई, 2008 को अजमेर नगर निगम का तथा अगस्त, 2008 में बीकानेर नगर निगम का गठन किया गया है।

राजस्थान के भौतिक भूभाग

- वेगनर सिद्धान्त के अनुसार प्रागैतिहासिक काल (इयोसीन व प्लास्टोसीन काल) में विश्व दो भूखण्डों 1.अंगारा लैण्ड व 2. गौड़वाना लैण्ड में विभक्त था जिनके मध्य टेथिस सागर विस्तृत था। **राजस्थान विश्व के प्राचीनतम भू-खण्डों का अवशेष है।**
- राजस्थान के उत्तरी पश्चिमी मरूस्थलीय प्रदेश व पूर्वी मैदान टेथिस महासागर के अवशेष माने जाते है। जो कालान्तर में नदियों द्वारा लाई गई तलछट के द्वारा पाट दिये गये थे।
- राज्य के अरावली पर्वतीय एवं दक्षिणी-पूर्वी पठारी भाग गौड़वाना लैण्ड के अवशेष माने जाते है।
- **राजस्थान को चार भौतिक विभागों में बाँटा गया है-**
  1. उत्तर पश्चिमी मरूस्थलीय प्रदेश
  2. मध्यवर्ती अरावली पर्वतीय प्रदेश
  3. पूर्वी मैदान
  4. दक्षिणी पूर्वी पठारी मैदान

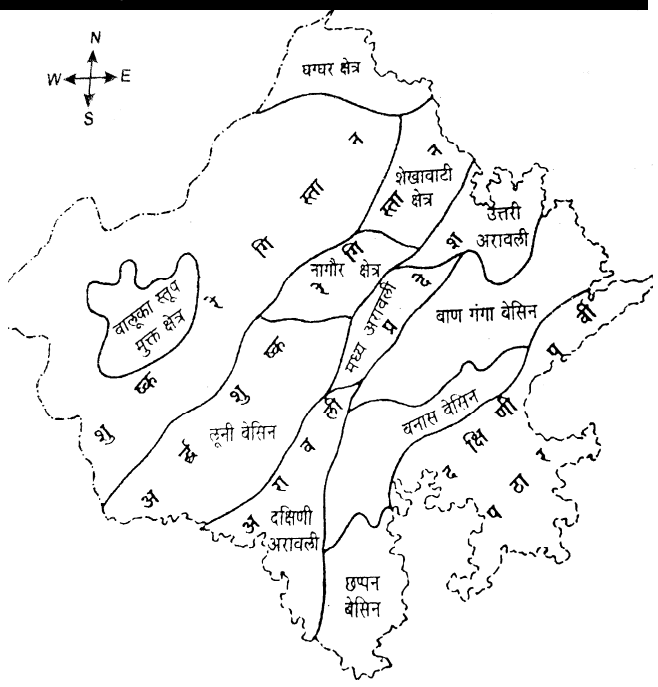

1- उत्तर पश्चिमी मरूस्थलीय प्रदेश

- राजस्थान में अरावली पर्वतमाला के पश्चिमी का क्षेत्र शुष्क एवं अर्द्धशुष्क मरूस्थलीय प्रदेश है जिसे थार मरूस्थल के नाम से जाना जाता है।
- राजस्थान में थार मरूस्थल, का लगभग 62 प्रतिशत भाग आता है इसके अंतर्गत बाड़मेर, जैसलमेर, बीकानेर, जोधपुर, पाली, जालौर, नागौर, सीकर, चूरू, झुंझुनँ, हनुमानगढ़ व गंगानगर आदि जिले आते है।
- थार का मरूस्थलीय टेथिस सागर का अवशेष माना जाता है।
- राजस्थान के कुल क्षेत्रफल का उत्तरपश्चिमी मरूस्थलीय प्रदेश 61.11 प्रतिशत है।
- इस प्रदेश में राज्य की 40 प्रतिशत जनसंख्या निवास करती है।
- देश के 142 डेजर्ट ब्लॉकों में से राजस्थान में 85 डेजर्ट ब्लॉक है।
- सामान्य ढाल पूर्व से पश्चिम तथा उत्तर से दक्षिण की और है।
- रेतीले शुष्क मैदान एवं अर्द्धशुष्क मैदान को विभाजित करने वाली रेखा 25 सेमी. वर्षा रेखा है। जिसके आधार पर दो भागों में विभक्त हैं-
  1. पश्चिम विशाल मरूस्थल या रेतीला शुष्क मैदान
  2. राजस्थान बांगर (बांगड) या अर्द्ध शुष्क मैदान

1. पश्चिम विशाल मरूस्थल या रेतीला शुष्क मैदान

- वर्षा का वार्षिक, औसत 20cm।
- क्षेत्र-बाडमेर, जैसलमेर, गंगानगर, चूरू।
- कम वर्षा के कारण- यह प्रदेश ''शुष्क बालूका मैदान'' भी कहलाता है।
- इस मैदान को दो भागों में बांटा जाता है-
  - A. बालूका स्तूप युक्त मरूस्थलीय प्रदेश
  - B. बालुका स्तूप मुक्त क्षेत्र

A. बालूका स्तूप युक्त मरूस्थलीय प्रदेश

- बालू के टीले।
- ये क्षेत्र वायु अपरदन एवं निक्षेपण का परिणाम है।

यहाँ निम्न बालुका स्तूपों का बाहुल्य है-

i. पवनानुवर्ती बालुका स्तूप- जैसलमेर, जोधपुर, बाडमेंर में इन पर वनस्पति पाई जाती है।

ii. बरखान या अर्द्ध चन्द्राकार बालुका स्तूप-चूरू, जैसलमेर, सीकर, लुणकरणसर, सूरतगढ, बाड़मेर, जोधपुर आदि। ये गतिशील, रंध्रयुक्त, व नवीन बालुयुक्त होते है।

iii. अनुप्रस्थ बालुका स्तूप-बीकानेर, द. गंगानगर, हनुमानगढ़, चूरू, सूरतगढ़, झुंझुनू, ये पवन की दिशा में समकोण पर बनते है।

iv. पैराजोलिक बालुका स्तूप-सभी मरूस्थली जिलों मे विद्यमान, **निर्माण**-वनस्पति एवं समतल मैदानी भाग के बीच उत्पादन से आकृति-हेयरपिननुमा।

v. ताराबालुका स्तूप-मोहनगढ, पोकरण (जैसलमेर), सूरतगढ़ (गंगानगर), **निर्माण**- अनियतवादी एवं संश्लिष्ट पवनों के क्षेत्र में।

vi. नेटवर्क बालुका स्तूप- हनुमानगढ़ से हिसार तक।

B. बालुका स्तूप मुक्त क्षेत्र

- पूर्वी भाग में स्थित।
- इसे जैसलमेर-बाड़मेर का चट्टानी क्षेत्र भी कहते है।
- टर्शियरी व प्लीस्टोसीन काल की परतदार चट्टानों का बाहुल्य।
- टेथिस के अवशेष वाले चट्टानी समूह।
- चूना पत्थर की चट्टाने मुख्य।
- इनमें वनस्पति अवशेष व जीवाश्म पाये जाते है। उदाहरण- जैसलमेर के राष्ट्रीय मरूउद्यान में स्थित **आकल वुड फॉसिल पार्क।**
- इसी प्रदेश की अवसादी शैलों मे भूमिगत जल का भारी भण्डार लाठी सीरीज क्षेत्र इसी भूगर्भीय जल पट्टी का उदाहरण है।
- टर्शियरीकालीन चट्टानों मे गैस-खनिज तेल के व्यापक भण्डार बाडमेर (गुडामालानी, बायतु) में एवं जैसलमेर में तेल व गैस के व्यापक भण्डार।

2. राजस्थान बांगर (बांगड) या अर्द्ध शुष्क मैदान

- अर्द्धशुष्क मैदान महान शुष्क रेतीले प्रदेश के पूर्व मे व अरावली पहाड़ियों के पश्चिम मे लूनी नदी के जल प्रवाह क्षेत्र में अवस्थित।
- यह आंतरिक प्रवाह क्षेत्र है।
- इसका उत्तरी भाग घग्घर का मैदान, उत्तर-पूर्वी भाग शेखावाटी का आंतरिक जल प्रवाह क्षेत्र व दक्षिण-पूर्वी भाग लूनी नदी बेसिन तथा मध्यवर्ती भाग ''नागौरी उच्च भूमि'' है।
- पश्चिमी मरूस्थलीय प्रदेश को मुख्यत: चार भागों बांटा गया है-

(i) घग्घर का मैदान

निर्माण-घग्घर, वैदिक सरस्वती, सतलज एवं चौतांग नदियों की जलोढ़ मिट्टी से।

- घग्घर नदी के घाट को ''नाली'' कहते है।
- विस्तार- हनुमानगढ़, गंगानगर।
- वर्तमान- मृत नदी नाम से विख्यात।
- वर्षा ऋतु में बाढ़ आने पर हनुमानगढ जलमग्न।
- भटनेर के पास रेगिस्तान मे विलुप्त।

(ii) लूनी बेसिन या गोडवार प्रदेश

- लूनी व सहायक नदियों का अपवाह प्रदेश।
- इसमें जोधपुर, जालौर, पाली एवं सिरोही शामिल।
- इस क्षेत्र में जालौर- सिवाना पहाड़िया स्थित जो ग्रेनाइट के लिए प्रसिद्ध है।
- मालाणी पहाड़िया व चूना पत्थर की चट्टाने भी स्थित।
- बालोतरा के बाद लूनी नदी का पानी नमकयुक्त चट्टानों, नमक कणों एवं मरूस्थलीय प्रदेश के अपवाह तंत्र के कारण खारा हो जाता है।
- यहां जसवंत सागर/पिचियाक बांध, सरदारसमंद, हेमावास बांध, एवं नयागांव आदि बांध।

(iii) नागौरी उच्च भूमि प्रदेश

- बांगड का मध्यवर्ती भाग, जहां नमक युक्त झीले, अंतर्प्रवाह, जलक्रम, प्राचीन चट्टाने एवं ऊंचा-नीचा धरातल मौजूद।
- वहा डीड़वाना, कुचामन, सांभर, डिगाना झीलें।
- यहां माइकाशिष्ट नमकीन चट्टानें, जिनसे केशिकात्व के कारण नमक सतह पर आता रहता है।

(iv) शेखावाटी आंतरिक प्रवाह क्षेत्र

- चूरू, सीकर, झुंझुनू व नागौर का कुछ भाग।
- बरखान स्तूपों का बाहुल्य।
- नदियां- कांतली मेथा, रूपनगढ़, खारी इत्यादि।

निर्माण कैप्सूल ✍

- मरूस्थलीकरण का प्रमुख कारण मानवीय क्रियाएं व अनियंत्रित पशु चारण है।
- आकल वुड फॉसिल्स पार्क जैसलमेर में है।
- बाटाडू का कुआ (बाड़मेर) रेगिस्तान तेल व लिग्नाइट के विशाल भण्डार मौजूद है।
- **रन 'टाट' :** मरूस्थल में नीचे भागों में बनी अस्थाई झीलें।
- **चन्दन नलकूप** - जैसलमेर के पूर्व में स्थित मीठे पानी के कारण इसे थार का घड़ा कहा जाता है।
- **गुढ़ामालानी** - यहाँ प्राप्त तेल के भण्डार विश्व में सबसे कम गहराई प्राप्त तेल के भण्डार है।
- **हम्मादा** - चटटानी मरूस्थलों को हम्मादा कहा जाता है
- **रैग**- मिश्रित मरूस्थल को कहते है।
- **इर्ग**- रेतीले मरूस्थल को कहते है।
- **बरखान**- अर्द्धचन्द्रकार रेतीले धोरों को कहते है।
- **अनुप्रस्थ बालुका स्तूप** - पवनों के समकोण में बनने वाले बालुका स्तुपों को कहते है।
- **अनुदैर्ध्य बालुका स्तूप**- पवनों की दिशा में बनने वाले बालुका स्तुपों को कहते है।

2- मध्यवर्ती अरावती पर्वतीय प्रदेश

- अरावली प्राचीनतम पर्वत श्रेणी है जो राज्य में उत्तर-पूर्व से दक्षिण-पश्चिम तक फैली हुई है।
- गौंडवानालैण्ड का अवशेष, उत्पत्ति-प्री-कैम्ब्रियन काल में।
- दक्षिण भाग में पठार, उत्तरी एवं पूर्वी भाग में मैदान एवं पश्चिमी भाग में मरूस्थल, प्रारम्भ में ऊंचे पर्वत, आज अवशेष।
- प्राचीनकाल नवीन वलित पर्वत/अमेरिकी अप्लेशियन के समान।
- उत्तर-पश्चिम में सिंधु बेसिन और पूर्व में गंगा बेसिन के मध्य (महान जल विभाजक (केस्ट लाइन) के रूप में)।
- उत्तर में दिल्ली से प्रारम्भ होकर गुजरात में पालनपुर तक लगभग 692 किमी. की लम्बाई में विस्तृत है।
- यह श्रेणी राजस्थान में उत्तर-पूर्व में खेतड़ी से दक्षिण-पश्चिम में खेडब्रह्मा(गुजरात) तक लगभग 550 किमी. की लम्बाई में है।
- राज्य के 13 जिलों- सिरोही, उदयपुर, राजसमंद, अजमेर जयपुर, दौसा, अलवर, झुंझुनँ सीकर और डुँगरपुर में इसका विस्तार है।
- यह पर्वत श्रेणी विश्व की प्राचीनतम वलित पर्वतीय श्रृंखला है।
- अरावली पर्वतमाला राजस्थान में गोंडवाना भूखण्ड का एक भाग है।
- अरावली पर्वत एक प्रमुख जल विभाजक (¡ter Divide) है जिसके दोनों और पूर्व एवं पश्चिम में नदियां बहती है।
- सोमेश्वर और हाथीगुड़ा दर्रा से जोधपुर और उदयपुर के मध्य आने वाले मार्ग (रेलमार्ग) है।
- अबुल फजल ने अरावली की पर्वत श्रेणीयों को ऊँट की गर्दन कहकर सम्बोधित किया था।

अरावली प्रदेश को निम्नाकित चार प्रमुख भागों में विभाजित किया जा सकता है:-

(i) उत्तरी पूर्वी अरावली प्रदेश
(ii) मध्य अरावली
(iii) दक्षिण अरावली
(iv) आबू पर्वत खण्ड

(i) उत्तरी पूर्वी अरावली प्रदेश :-

- जयपुर, दौसा, तथा अलवर में इस क्षेत्र का विस्तार है।
- इनमें शेखावटी की पहाड़ियाँ, तोरावाटी की पहाड़ियाँ तथा जयुपर और अलवर की पहाड़ियॉ सम्मिलित है।
- इस भाग में प्रमुख चोटियॉ रघुनाथगढ़ सीकर में, भैराच अलवर में व बाबाई जयपुर में हैं।
- इस भाग की सबसे ऊँची पर्वत चोटी **रघुनाथगढ़** (सीकर) है।

(ii) मध्य अरावली प्रदेशः-

- इस प्रदेश के अन्तर्गत अजमेर, जयपुर जिले तथा टोंक जिले के दक्षिण-पश्चिम में स्थित अरावली श्रेणी की पहाड़ियां शामिल है।
- इस क्षेत्र के उच्च प्रदेश पश्चिम में बिखरे कटकों के साथ सांभर बेसिन द्वारा, उत्तर में अलवर पहाड़ियों के द्वारा पूर्व में करौली उच्च भूमि के द्वारा तथा दक्षिण में बनास मैदान द्वारा सीमित है।
- पश्चिम में सर्पिलाकार पर्वत श्रेणीयाँ नागपहाड़ी कहलाती है।
- ब्यावर (अजमेर) तहसील में बर, पाखरिया, शिवपुरा घाट, सूराघाट नामक दर्रे स्थित है।
- इस प्रदेश को पुनः दो भागों में विभाजित किया जा सकता है:

(a) शेखावाटी निम्न पहाड़ियां :

- इस प्रदेश का भू-दृश्य बालू पहाड़ियां और निम्न गर्तो से परिलक्षित है।
- यह आंतरिक प्रवाह क्षेत्र है।
- सांभर झील से प्रारंभ होने वाली सबसे लंबी श्रेणी झुंझुनूं जिले में सिहना तक जाती है।
- अन्य छोटी-छोटी पहाड़ियां इस प्रदेश में विभिन्न नामों से जानी जाती है जैसे पुराना घाट, नाहरगढ़, आड़ा डूंगर, राहेड़ी, तोरावाटी आदि।

(b) मेरवाड़ पहाड़ियां :

- मेरवाड़ पहाड़ियां मारवाड़ के मैदान को मेवाड़ के उच्च पठार से अलग करने वाली पर्वत श्रेणी है जो अजमेर शहर के समीपवर्ती भागों में पहाड़ियों के समानान्तर अनुक्रम में दृष्टिगोचर होती है।
- इस उच्चतम शिखर अजमेर नगर के निकट समुद्रतल से लगभग 870 मीटर ऊँचा है जो तारागढ़ के नाम से जाना जाता है।

(iii) <u>दक्षिण अरावली (मेवाड़ का चट्टानी पर्वतीय प्रदेश एवं भोरट का पठार)</u>:-

- जरगा (उदयपुर) इस भाग की सबसे ऊँची पर्वत चोटी है। उदयपुर, डूँगरपुर, चित्तौडगढ़, प्रतापगढ़ एवं सिरोही का पूर्वी भाग और राजसंमद जिले इसमें सम्मिलित है।
- **भाकर**- पूर्वी सिरोही में तीव्र ढाल व ऊबड़- खाबड़ जगह को स्थानीय भाषा में 'भाकर' कहते है।
- **गिरवा**- उदयपुर बेसिन को घेरे हुए तश्तरीनुमा पहाड़ी श्रृंखला को स्थानीय भाषा में गिरवा कहते है।

(iv) आबू पर्वत खण्डः-

- सिरोही जिले में गुरूशिखर पर्वत (1722 मी.) राज्य का सर्वोच्च शिखर है।
- **सन्तों का शिखर**- कर्नल टॉड ने गुरूशिखर को सन्तों का शिखर कहॉ है।
- इसमें क्वार्ट्जाइट नीस शिष्ट व ग्रेनाइट चट्टानें पाई जाती है।
- सबसे ऊँची चोटी गुरूशिखर (1727 मी.) हिमालय से नीलगिरी के मध्य सबसे ऊंची चोटी।

- आबू क्षेत्र के पश्चिम में जसवन्तपुरा पर्वतीय क्षेत्र में मुख्यत: डोरा पर्वत (869 मीटर) विस्तृत है। जसवंतपुरा पर्वत क्षेत्र के पश्चिम में रानीबाड़ा उच्च प्रदेश वृक्ष विहीन अनावृत प्रदेश है।
- सिवाना ग्रेनाइट पर्वत क्षेत्र के नाम से प्रख्यात पर्वतीय क्षेत्र में मुख्यत: गोलाकार पहाड़ियां है, इन्हें **छप्पन की पहाड़ियां** एवं **नाकोड़ा पर्वत** के नाम से पुकारा जाता है।
- इसी प्रकार जवाई नदी घाटी के दक्षिण में विस्तृत जालोर पर्वत क्षेत्र के रोजा भाखर (730 मीटर), इसराना भाखर (839 मीटर) एवं झारोला पहाड़ (588 मीटर) प्रमुख है।

3-पूर्वी मैदान

- राजस्थान के पूर्वी मैदानी प्रदेश में भरतपुर, अलवर के भाग, धौलपुर सवाई माधोपुर, जयपुर, टोंक, भीलवाड़ा के मैदानी भाग सम्मिलित किए जाते हैं तो दूसरी ओर दक्षिण में स्थित मध्य माही का क्षेत्र भी इसमें सम्मिलित किया जाता है।
- यह मैदान संपूर्ण राज्य के 23.3% भू-भाग को घेरे हुये है। पश्चिमी सीमा अरावली के पूर्वी किनारों द्वारा उदयपुर के उत्तर तक और इससे आगे उत्तर में 50 सेमी. की समवर्षा रेखा द्वारा निर्धारित होती है। मैदान की दक्षिण-पूर्वी सीमा विन्ध्यन पठार द्वारा बनाई जाती है।
- इस मैदान के अंतर्गत चम्बल बेसिन, माही बेसिन (छप्पन बेसिन) और बनास बेसिन आते हैं।
- यहाँ वर्षा का वार्षिक औसत 60 से 100 सेमी. तक रहता है। राज्य की लगभग 39 प्रतिशत जनसंख्या निवास करती है।

पूर्वी मैदान के चार प्रमुख उपभाग

(अ) चम्बल बेसिन

- यह क्षेत्र डांग के नाम से जाना जाता है।
- कोटा, बूंदी, झालावाड़, सवाई माधोपुर, करौली, धौलपुर जिले इसके अंतर्गत आते है।
- चम्बल बेसिन क्षेत्र में मुख्यत: उत्खात स्थलाकृति (Badland Topography) फैली है, तथा यहाँ नवीन कांपीय जमाव भी पाए जाते हैं।
- डांग ऊबड़-खाबड़ अनुपजाऊ भूमि है जहॉ दस्यु शरण पाते है ।
- खादर-5 से 30 मीटर गहरे खड्डे वाली भूमि स्थानीय भाषा में खादर के नाम से जानी जाती है।

(ब) बनास बेसिन

- यह कांप मिटटी से बना उपजाऊ क्षेत्र है यह मैदान बनास तथा उसकी सहायक नदियों द्वारा सिंचित है। इस मैदान को दक्षिण में मेवाड़ का मैदान तथा उत्तर में मालपुरां करौली का मैदान कहते हैं।
- मेवाड़ मैदान, बनास नदी तथा इसकी सहायक नदियां जैसे खारी, सोडरा, मोसी और मोरल जो बायें किनारे पर बहती हैं और बेड़च, बाजायिन और गोलवा जो दाहिने किनारे पर मिलती है, से सिंचित हैं। यह उदयपुर के पूर्वी भागों, पश्चिमी चित्तौड़गढ़, भीलवाड़ा, टोंक, जयपुर, पश्चिमी सवाईमाधोपुर और अलवर के दक्षिणी भागों में विस्तृत हैं।

(स) छप्पन मैदान (मध्य माही बेसिन)

- यह क्षेत्र माही नदी का प्रवाह क्षेत्र है।
- **वागड़** - इसका दक्षिण से अधिक गहरा व विच्छेदित क्षेत्र 'वागड़ का मैदान' कहलाता है।
- **छप्पन का मैदान** - प्रतापगढ़ तथा बाँसवाड़ा के मध्य 56 ग्रामों का समूह छप्पन का मैदान कहलाता है।
- **कांठल का मैदान** - प्रतापगढ़ का सम्पूर्ण क्षेत्र कांठल का मैदान कहलाता है।
- माही बसिन ढाल पश्चिम में गुजरात राज्य की और तथा चम्बल

(द) बाणगंगा बेसिन

- पूर्वी मैदानी भाग के उत्तरी बेसिन का बांणगंगा बेसिन कहते हैं।

निर्माण कैप्सूल ✍

- **छप्पन का मैदान**- (भाटी मैदान), बांसवाड़ा, प्रतापगढ़, डूँगरपुर, के मध्यवर्ती भाग में विस्तृत।
- इस क्षेत्र का ढाल-पूर्व दिशा में, सभी नदियाँ पूर्व की ओर बहकर बंगाल की खाड़ी गिरती है।
- दक्षिण क्षेत्र का ढलान पश्चिमी में अत: केवल यही नदी खम्भात की खाड़ी में गिरती है।
- बीहड़ व कदराएं मुख्य विशेषता।
- दक्षिण पश्चिम सीमा पर विन्ध्यन पठार व हाडौती का पठार।
- पश्चिम भाग देवगढ़ के आसपास पीडमांट का मैदान।
- पूर्वी मैदान का वह क्षेत्र जो नवीन जलोढ़ मिट्टी से निर्मित व प्रतिवर्ष नदियों का पानी वहां तक पहुंचता है उसे खादर कहते है।

4- दक्षिणी पूर्वी पठार (हाड़ौती पठार)

- राजस्थान मे यह पठार मेवाड़ मैदान के दक्षिण-पूर्व में चंबल नदी के सहारे पूर्वी भाग में विस्तृत है और राजस्थान के 9. 6% भू-भाग को घेरे हुये है तथा 11 प्रतिशत जनसख्या निवास करती है।
- यह उत्तर पश्चिम में अरावली के महान सीमा भ्रंश द्वारा सीमांकित है और राजस्थान की सीमा के पार तब तक फैला हुआ है जब तक बुंदेल-खण्ड के पूर्ण विकसित कगार दिखाई नहीं देते।
- मालवा पठार का ही भाग, इसे **''हाड़ौती का पठार''**/ लावा का पठार भी कहते है। यह आगे जाकर मालवा के पठार में मिल जाता है।
- ढाल दक्षिण से उत्तर की ओर। यह पठारी भाग अरावली और विंध्याचल पर्वत के बीच **संक्रान्ति प्रदेश** है।
- इसका विस्तार झालावाड़, कोटा, बारां, और बूंदी जिलों में है।
- इस प्रदेश में लावा मिश्रित शैल एवं विन्ध्य शैलों का सम्मिश्रण है।
- इस क्षेत्र में अनेक पर्वत श्रेणीयाँ है जिसमें से बूंदी की पहाड़िया तथा मुकुन्दरा की पहाड़ियाँ प्रसिद्ध है।
- इस क्षेत्र की ओसत ऊँचाई 500 मीटर है मुकुन्दरा और बूंदी की पहाड़िया अर्द्ध चन्द्राकार रूप से विस्तृत है।
- हाड़ौती पठार मुख्यत: कोटा व बुंदी जिलों में फैला हुआ है। हाड़ौती पठार मुख्यत: दो भागों में बाँटा हुआ है-
  - **(i) विन्ध्य कगार भूमि** - यह कगार भूमि क्षेत्र बड़े-बड़े बलुआ पत्थरों से निर्मित है। यह चम्बल बनास नदियों के मध्य करौली धौलपुर जिले का भू-भाग है। उत्तर-पश्चिमी में चम्बल के बायें किनारे पर तीव्र ढाल वाले कगार है।
  - **(ii) दक्कन लावा पठार** - यह भौतिक इकाई ऊपरमाल (उच्च पठार या पथरीला) के नाम से जानी जाती है। यह क्षेत्र पार्वती, कालीसिंध चम्बल व अन्य नदियों द्वारा सिंचित है। चम्बल और उसकी सहायक नदियों ने कोटा में एक त्रिकोणीय कांपीय बेसिन का निर्माण किया है।

उपभाग

- **उड़िया या ठडिया का पठार**- सिरोही जिले में स्थित यह राजस्थान का सबसे ऊँचा पठार।
- **आबू का पठार**- सिरोही जिले में मॉऊट आबू पर्वत के निकट, राजस्थान का दूसरा ऊँचा पठार।
- **भोराट का पठार**- कुम्भलगढ़ (राजसमंद) एवं गोंगुन्दा (उदयपुर) के मध्य स्थित पठार, इसे मेवाड़ का पठार भी कहते है।
- **मेसा का पठार**- चित्तौड़ जिले मे स्थित इसी पठार की चित्रकूट की पहाड़ी पर प्राचीनकाल में चित्रागंद मौर्य के द्वारा चित्तौड़ दुर्ग का निर्माण हुआ।
- **उपरमाल का पठार**- भैंसरोडगढ़ एवं बिजोलिया के मध्य स्थित। विस्तार-चित्तौड़गढ़, भीलवाड़ा, बूंदी, कोटा, झालावाड़ इत्यादि जिलों मे है।
- **मुकुन्दवाड़ा की पहाडियाँ**- कोटा व झालरापाटन झालावाड़ के बीच स्थित इस भू-भाग का ढाल दक्षिण से उत्तर की ओर।
- **गिरवा**- उदयपुर क्षेत्र मे तश्तरीनुमा आकृति वाले पहाड़ों की मेखला को स्थानीय भाषा में **गिरवा** कहते है।

निर्माण कैप्सूल ✍

- **मगरा**- उदयपुर के उत्तर-पश्चिमी पर्वतीय भाग में स्थित पहाड़ी क्षेत्र का मगरा के नाम से जाना जाता है।
- रघुनाथगढ़ पर्वत सीकर में स्थित है।
- **खड़** - खेती में पाये जाने वाले घास का एक प्रकार है।
- **खड़ीन** - जैसलमेर जिले के उत्तर दिशा में बड़ी संख्या में स्थित प्याला झीलें जो कि प्राय: निम्न कगारों से घिरी रहती है।
- **बीजासण का पहाड़** - यह मांडलगढ़ कस्बे के पास स्थित है। (भीलवाड़ा)।
- **रन**- बालुका स्तुपों के बीच की निम्न भूमि में जल भर जाने से निर्मित अस्थाई झीलें व दलदली भूमि रन कहलाती है। कनोड़ झाकरी, बरमसर, पोकरण, (जैसलमेर), बाप (जौधपुर) तथा थोब (बाड़मेर) में स्थित प्रमुख रन है।
- **बावड़ी** - ऐसे सीढ़ीदार कुएं जिनमें सीढ़ीयों की सहायता से सहज ही पानी की सतह तक उतरा जा सकता है।
- **धोरे-रेत** के बड़े-बड़े टीले जिनकी आकृति लहरदार होती है
- **लाठी सीरीज क्षेत्र**- उपयोगी सेवण घास की चौड़ी पट्टी जो जैसलमेर में पोकरण से मोहनगढ़ तक पाकिस्तानी सीमा के सहारे विस्तृत है। यह क्षेत्र भू-गर्भीय जल पट्टी के लिए प्रसिद्व है।
- **धरियन**- जैसलमेर जिले के भू-भाग जहाँ आबादी लगभग नगण्य है। स्थानांतरित बालकु स्तपों को स्थानीय भाषा में 'धरियन' नाम से पुकारते है।
- **लघु मरूस्थलीय**- थार का मरूस्थल का पूर्वी भाग जो कि कच्छ से बीकानेर तक फैल हुआ है।
- **त्रिकुट पहाड़ी** - इस पर्वत पर जैसलमेर का किला अवस्थित है।
- **चिड़ियाटूक पहाड़ी** - इस पहाड़ी पर जोधपुर को मेहरानगढ़ दुर्ग स्थित है।
- **तारागढ़ पहाड़ी** - अजमेर में स्थित मध्य अरावली की सबसे ऊँची चोटी (870 मी)।
- अरावली की अन्य चोटियाँ- गुरूशिखर, सेर (1597 मी.), देलवाड़ा (1442 मी.), जरगा (1431 मी.) अचलगढ़ (1380 मी.) कुम्भलगढ़ (1274 मी), रघुनाथगढ़ (1155 मी.)
- **देशहरो**- जरगा व रागा पहाड़ियों के बीच का पठारी क्षेत्र। **पीडमांट मैदान**- देवगढ़ के समीप अरावली श्रेणी का निर्जन पहाड़ी क्षेत्र।
- **ऊपरमाल**- चित्तौड़गढ़ के भैसरोड़गढ़ से भीलवाड़ा के बिजोलिया तक का पठारी भाग।
- **खेराड तथा माल खेराड़**- भीलवाड़ा जिले की जहाजपुर तथा टाँक का अधिकांश भाग जो बनास बेसिन में स्थित है। **लासड़िया पठार**- जयसमन्द उदयपुर से आगे पूर्व की और विच्छेद व कटा- फटा पठार लासड़िया का पठार कहलाता है
- **कूबड़ पटटी**- अजमेर-नागौर में फ्लोराइड़ युक्त पानी वाला क्षेत्र।
- **घूघरा घाटी** - अजमेर में स्थित प्रसिद्ध अरावली पर्वतमाला की घाटी है जिसमें राजस्थान लोक सेवा आयोग का कार्यालय स्थित है।

राजस्थान की सर्वोच्च चोटियाँ

चोटी	ऊँचाई	संबंधित जिला
गुरूशिखर	1722 मी.	सिरोही
सेर	1597 मी.	सिरोही
दिलवाड़ा	1442 मी.	उदयपुर
जरगा	1431 मी.	उदयपुर
अचलगढ़	1380 मी.	सिरोही

- अरावली पर्वतमाला के पश्चिम में 12 तथा पूर्व में 21 जिले है।
- अरावली पर्वतमाला के मानसून के समानान्तर होने के कारण राजस्थान में अनियमित वर्षा होती है।
- **भोराट का पठार** - गोगुन्दा व कुम्भलगढ़ के मध्य स्थित अरावली पर्वत श्रृंखला का भाग।
- उत्तरी क्षेत्र में अरावली श्रृंखला फाइलाइट और क्वार्ट्ज से निर्मित है।
- अरावली के ढ़ालों पर मुख्यत: मक्का की खेती की जाती है।
- अरावली पर्वतमाला की औसत ऊँचाई समुन्द्र तल से 930 मी. है।
- अरावली पर्वतमाला उत्तर-पश्चिम में सिन्धु बेसिन और पूर्व में गंगा बेसिन के मध्य जल विभाजक रेखा का कार्य करती है।
- **नाल**- मध्यवर्ती अरावली पर्वतीय श्रेणी में स्थित दर्रे व पहाड़ी मार्ग।
- सीकर जिले की पहाड़ियों का स्थानीय नाम मालखेत की पहाड़ियाँ कहते हैं।
- हर्ष की पहाड़ियां जिन पर जीण माता का प्रसिद्ध मंदिर स्थित है सीकर जिले में हैं।
- लूनी बेसिन मे मध्यवर्ती घाटी को मालाणी पर्वत श्रृंखला कहते है। यह जालौर व बालोतरा के मध्य स्थित है।
- अरावली पर्वत श्रृंखला को राजस्थानी भाषा में आड़ा वाला **'Ada- Wla'** कहाँ जाता है।